सुथरे शाह जी क्रान्तिकारी रूप में

मीरी पीरी के शहनशाह श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी महाराज के ज्योतिज्योत समाने के पश्चात् श्री सुथरे शाह जी ने श्री गुरु हरराय साहिब जी के दरबार में भी भारी सेवा की तथा उनकी कृपा दृष्टि भी इन पर हमेशा बनी रही। सतगुरु जी की आज्ञा लेकर सुथरे शाह जी ने देश में व्याप्त कुरीतियों का विरोध करने के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। वे जहाँ भी जाते जनता उन्हें आदर सत्कार एवं स्नेह देती।

इन्हीं दिनों मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को सताने के लिए हुकुमनामा जारी कर दिया गया कि जो हिन्दू जनेऊ पहनकर घर से बाहर निकले तो मुसलमान उनके जनेऊ को दाँतों से काट दे और जो हिन्दू टीका लगाकर बाहर निकले उसका टीका मुसलमान चाट ले। इस तरह हिन्दुओं की दशा दिन प्रतिदिन बुरी होती जा रही थी। वे डरे हुए और सहमे हुए जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस प्रकार हिन्दुओं की दशा देखकर श्री सुथरे शाह जी से रहा न गया। वे शहर के काज़ी के पास गए और जाकर प्रार्थना की कि हिन्दू ब्राह्मणों के साथ जो व्यवहार हो रहा है वह अनुचित है। वे भी भगवान के बनाए हुए इन्सान हैं। उनके साथ इन्सानों जैसा व्यवहार होना चाहिए।

काज़ी ने पूछा- 'आप कौन हैं? हिन्दू या मुसलमान हो?'

सुथरे शाह जी ने कहा - 'मैं न हिन्दू हूँ न मुसलमान हूँ। भगवान ने मुझे इन्सान के रूप में इस दुनिया में भेजा था इसलिए न मैं हिन्दू बन सका न मुसलमान बन सका हूँ।' काज़ी ने कहा, 'इन्सान तो सभी होते हैं। परन्तु कोई हिन्दू के घर उत्पन्न होता है तो कोई मुसलमान के घर उत्पन्न होता है। जो हिन्दू के घर उत्पन्न होता है वह हिन्दू होता है और जो मुसलमान के घर उत्पन्न होता है वह मुसलमान होता है।' सुथरे शाह जी ने कहा, 'क्या कोई

मुसलमान हिन्दू नहीं बन सकता?' 'नहीं, कोई मुसलमान काफिर बनने के लिए तैयार नहीं हो सकता। अल्लातालाा का हुकुम है कि मुसलमान ही बहिश्त (स्वर्ग) में जायेंगे और काफिर दोज़ख की आग में जलेंगे। इसलिए मुसलमान अपने शवों को भूमि में दफन करते है कि जब कयामत आयेगी तो अल्लाह के हुकुम से वह कबरों से निकाले जायेंगे, हज़रत साहिब उनकी शरायत (सिफारिश) करेंगे और सभी जन्नत (स्वर्ग) में जायेंगे। आप देखते नहीं कि हिन्दू जब मरता है, वह यहाँ भी आग में जलाया जाता है।' सुथरे शाह जी ने पूछा, 'काज़ी साहिब! आप काफिर किसको कहते हैं?'

'जो भगवान पर भरोसा न करे, भगवान को न माने वह काफिर है'— काज़ी ने कहा। 'यह ठीक है जो आप कह रहे हैं।' सुथरे शाह जी ने कहा, 'लेकिन यह तो बताओ कि काफिर इन्सान किसने बनाए हैं तथा यह किसके बन्दे हैं?' काज़ी— 'यह बन्दे तो खुदा के ही है, लेकिन काफिर खुदा को भूलकर बुत (मूर्ति) की पूजा करने लगते हैं। उन्हें खुदा से अधिक मूर्ति (बुत) अच्छी लगती है।' सुथरे शाह जी - 'मूर्ति क्या होती है?' काज़ी, 'जो शक्ल इन्सान बनाता है पत्थर की, संगमरमर की, पीतल की, लोहे या तांबे की, यह सभी बुत ही तो होते हैं।'

सुथरे शाह जी- 'आपके कहने का अर्थ है कि इन्सान की पूजा, इन्सान का इन्सान के आगे माथा टेकना, भगवान से अधिक इन्सान को प्यार करना यह सब बुत परस्ती है यह भी एक जुर्म है।' सुथरे शाह जी - 'क्या आप अपनी औरत और बच्चों से प्यार नहीं करते? क्या आप दौलत से प्यार नहीं करते?' काज़ी, 'हम इनको भगवान का समझकर प्यार करते हैं।' सुथरे शाह जी - 'आप हिन्दुओं को भी भगवान के द्वारा बनाए समझते हो, उनसे भी प्यार करो तो आपका भगवान आप पर खुश होगा।' काज़ी - 'हम हिन्दुओं को भी प्यार करते हैं, ताकि वह नरक में न जाए।'

सुथरे शाह जी - ' हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान ज़ालिम व हरामखोर होते हैं। इसलिए वे नरक में जायेंगे।' काज़ी- 'सब बकवास है। हिन्दू हरामखोर होते हैं जो अपने आप मुसलमान होते जा रहे हैं। जिनको यह विश्वास हो जाता है कि हिन्दू धर्म से मुसलमान हो जाना अच्छा है, वह जल्दी से मुसलमान हो जाते हैं। देखते नहीं हिन्दुस्तान में जितने भी मुसलमान है १० फीसदी तो असली मुसलमान हैं बाकि सब इन हिन्दुओं में से बने मुसलमान हैं।' सुथरे शाह जी- 'यह ठीक है कि आज इस्लामिक हकूमत है, इसलिए हिन्दू लालच करके, डर से या फिर जान के भय से मुसलमान होते जा रहे हैं। परन्तु स्वाभिमानी अभी भी मुसलमानों से घृणा करते हैं, वह अपना धर्म छोड़ने की अपेक्षा अपनी जान पर खेल जाना अच्छा समझते हैं।' काज़ी - 'आप बताओ कि आप कौन हैं? मुझे शक है कि आप हिन्दू हैं और हिन्दुओं का पक्ष ले रहे हैं।'

सुथरे शाह जी - 'मैं नानक शाह दरवेश का फकीर हूँ। नानक को मक्के और बगदाद में मुसलमान वल्ली अल्लाह कहकर पुकारते हैं। उस नानक शाह का मज़हब वो है जो अल्ला या रब का मज़हब है। उस पातशाह का यही फरमान है कि भगवान एक है, वह सारे जहाँ को बनाने वाला है। उसके कानून और उसके फरमान सारे संसार और इन्सानों के लिए एक ही हैं। इसलिए सारी दुनिया के इन्सानों का धर्म ईमान एक ही है और वह है इन्सानियत। कोई ठीक तरह से उसको याद करे, उसका भजन करे, उसके साथ प्यार करे, वही उसका बन्दा है। उसका कोई कानून नहीं कि उसे खास तरीके से खुश कर सके। हर इन्सान से प्यार करना, उसकी सहायता करना, यह इन्सानी धर्म है।' काज़ी - 'हाँ, हाँ। हम समझ गए, वलीअली बाबा हिन्दू थे और वह हिन्दुओं की मदद करते थे।' सुथरे शाह जी - 'यह गलत है कि वह हिन्दू थे। यह सच है कि वह हिन्दू घर में पैदा हुए परन्तु वह हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं पाखण्डों के विपरीत प्रचार करते रहे। उनका धर्म वह है जो रब का धर्म है।'

काज़ी - 'हाँ, हाँ। वह बाबा नानक जिनकी गद्दी के पाँचवें शहनशाह गुरु अर्जुन देव ने रब्बी कलाम, रब्बी वाणी एकत्रित करके श्री गुरु ग्रन्थ साहब की रचना की और जो धर्म के लिए शहीद किए गए।' काज़ी - 'हाँ, हाँ। हम समझ गए आखिर वो एक हिन्दू फकीर ही तो थे।' सुथरे शाह जी - 'आपने फिर वही रट लगा रखी है कि वह हिन्दू फकीर थे। उनका धर्म बस एक ही है, भग्वान की भक्ति करो, किसी को दुख न दो, किसी पर जुल्म न करो। जुल्म और जबर से रब का वैर है। यह कहर है, कहर करने वालों पर रब का कहर उतरता है।' काज़ी - 'पर इस्लाम का प्रचार करना कहर नहीं, भूले हुओं को रास्ता दिखाना और उस पर चलने के लिए कहना, यह जुल्म या कहर नहीं, यह पुण्य का काम है। हमारे रसूल का आदेश है कि काफिर को सच का रास्ता दिखलाकर इस्लाम में लाना बड़ा पुण्य का काम है। इसलिए मुसलमान हिन्दुओं के जनेऊ काटकर, उनके तिलक चाटकर उन्हें मुसलमान बनाने पर ज़ोर देते हैं।'

सुथरे शाह जी - 'काज़ी साहब। यह इस्लाम का प्रचार नहीं, यह जबर है, किसी की मर्जी के विरुद्ध उन्हें मज़बूर करना यह कहर है, रब की दुनिया से प्यार करने वाले ही रब के प्यारे माने जायेंगे। आप ने बाबा फरीद जी का कलाम तो सुना होगा –

फरीद खलक खलक में, खलक बसें रब माहिं।
मंदा किसनूँ आखिए जा तिस बिन कोई नाहिं।।

काज़ी - 'हाँ, हाँ। यह तो हम भी जानते हैं कि बाबा फरीद शकरगंज जी का फरमान इस तरह था। पर हमारे सामने इस्लाम का प्रचार करना हर मुसलमान का फर्ज़ है कि वह जायज या नाजायज ढंग से काफिरों को मुसलमान बनने पर मजबूर कर दे।' सुथरे शाह जी - 'हम तो फकीर लोग हैं, हमें इन बातों से क्या लेना? हम तो यह जानते हैं कि जुल्म के विरुद्ध

आवाज उठाओ। रब के बन्दों से ऐसा व्यवहार ठीक नहीं। यदि हिन्दुओं या पण्डितों के जनेऊ दाँतों से काटने और तिलक चाटने पर ही मुसलमान मज़हब का फैलाव होता है तो खूब जनेऊ काटो और खूब टीके चाटो। आज से मैं भी दिल्ली के बाजारों से जनेऊ डालकर और टीका लगाकर घूमा करुँगा।' इतना कहकर सुथरे शाह जी वहाँ से चल दिए। वह एक कसाई के पास गए, उससे सूअर का एक आँत लेकर गले में डाल ली। इसी प्रकार विष्ठा का टीका भी अपने माथे पर लगा लिया।

जो शरारती मुसलमान जनेऊ काटते और टीका चाटते थे उनके पास जाकर सुथरे शाह कहने लगे, 'मेरा जनेऊ काटो, मेरा टीका चाटो।' भला कोई भी मुसलमान सूअर के माँस को अपने दाँतों से कैसे काटता और गन्दगी का टीका कैसे चाटता। सुथरे शाह जी के इस कार्य से पूरे शहर में क्रान्ति आ गई। कुछ हिन्दू भी सुथरे शाह जी के साथ मिल गए। यह देखकर हिन्दुओं को खुशी होने लगी पर मुसलमान अन्दर ही अन्दर जलने लगे। इस बात की शिकायत काज़ी तक जा पहुँची। काज़ी ने सुथरे शाह जी को बुलाया और कहा कि वह इस हालत में सड़कों पर न घूमें और यह हुकुम भी दिया कि कोई भी मुसलमान किसी भी हिन्दू का जनेऊ न काटे तथा किसी भी हिन्दू का टीका न चाटे। सुथरे शाह जी ने काज़ी की बात मान ली और कहा कि 'मैंने यह सब जिस काम के लिए किया था, वह काम तो हो गया है, अब मुझे इसकी कोई जरुरत नहीं। मैं तो इस तरह करने के लिए तैयार नहीं था, मेरे सत्गुरु ने इसका बुरा माना है अब मुझे सत्गुरु के चरणों में माफी माँगनी पड़ेगी।' यह कहकर सुथरे शाह जी दिल्ली से वापिस पंजाब आ गए। उन्होनें वह रूप भी बदल लिया। अपना आधा चेहरा काला कर लिया व आधा सफेद। इस तरह का रूप बनाकर श्री गुरुहरिराय जी की हजूरी में पहुँचे तो गुरु महाराज जी आश्चर्यचकित रह गए। और पूछा कि उन्होने ऐसा क्यों किया?

सुथरे शाह जी ने कहा, 'मेरे शहनशाह जी! यह सब आप की कृपा है। मैंने एक गलती की थी कि सूअर की आँत का जनेऊ पहना था और गन्दगी का टीका लगाया था। यह सब एक नाटक था परन्तु इस नाटक के कारण बहुत कुछ हे गया। काज़ी ने हुकुम दिया कि अब कोई किसी का जनेऊ नहीं काटेगा और न ही किसी का टीका चाटेगा।' 'यह सब तो ठीक है। परन्तु आपने ऐसी शक्ल क्यों बनाई है?' सत्गुरु ने कहा। सुथरे शाह जी ने कहा, 'महाराज! इस नाटक के कारण मेरा आधा मुँह काला हो गया है परन्तु इसके फल के कारण मेरा आधा मुँह आपके दरबार में सफेद है। दातार जी, आप तो हर किसी के दिल की बात जानते हो। आप कृपा करो कि भविष्य में आपके इस सेवक को नाटक न करना पड़े।' सत्गुरु ने कहा, 'सुथरे शाह! यह नाटक नहीं, अपितु यह तो जनता की सेवा है, आपने गुरु घर में कई ऐसी कुरीतियाँ दूर करवाई हैं जिसे कोई गुरु का प्यारा भक्त ही दूर कर सकता है।'